राजस्थान के प्रमुख स्मारक

Monuments of Rajasthan

इकाई प्रथम

(Unit-Ist)

1. राजस्थान के प्रमुख दुर्ग
2. राजस्थान के प्रमुख मंदिर

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

चित्तौडगढ

- निर्माण चित्रागंद मौर्य ने (कुमार प्रबंधन के अनुसार)
- जीर्णोद्धार – राणा कुंभा
- पठार– मेसा का पठार।
- उपनाम – राजस्थान का गौरव, दुर्गों का सिरमौर ("गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया"), मालवा का प्रवेश द्वार, दक्षिण राजपूताने का प्रवेश द्वार, दक्षिणी सीमा का प्रहरी, त्रिकूट, खिज्राबाद आदि नामें से भी जाना जाता है।

विशेषताः–

- श्रेणी – धान्वन श्रेणी को छोड़कर सभी श्रेणियों।
- राजस्थान का दूसरा प्राचीनतम दुर्ग।
- राजस्थान का सबसे बड़ा दुर्ग।
- राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय दुर्ग।
- भारत का एकमात्र दुर्ग जिसमें कृषि की जाती है।
- इसकी आकृति व्हेल मछली जैसी है।
- राजस्थान में सर्वाधिक साके चित्तौड़ दुर्ग में हुए–3 साके।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के साके –
- प्रथम साका – 1303 ई. अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के कारण।
- शासक / केसरिया – राणा रतनसिंह, गोरा, बादल।

- जौहर – रानी पद्मनी सोलह सौ औरतो ने जौहर किया।
- द्वितीय साका – 1534 ई. बाहदुरशाह के आक्रमण के कारण।
- केसरिया – रावत बाघ सिंह (चित्तौड़गढ़ दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वारा पर बाघसिंह का स्मारक स्थित है)।
- जौहर – कर्मावती।
- तृतीय साका – 1568 अकबर के आक्रमण के कारण।
- केसरिया : जयमल राठौड़, फत्ता सिसोदिया।
- जौहर – फूलकँवर।
- अन्तिम प्रवेश द्वारा रामपोल पर फतेहसिंह सिसोदिया का स्मारक स्थित है।

दुर्ग के प्रमुख मंदिर –

तुलजा भवानी मंदिर :–

- निर्माण – बनवीर द्वारा।
- बनवीर की कुलदेवी।
- मराठा शिवाजी की आराध्य देवी।

श्रृंगार – चंवरी

- निर्माण – 'वेल्लका' ने।
- सोल्वे तीर्थ कर शांतिनाथ को समर्पित।
- इसी स्थान पर कुंभा की पुत्री रमाबाई का विवाह मंडप बनाया गया।

सात–बीस देवरी मंदिर – जैन मंदिर

- यह जैन मंदिर 27 जैन मंदिरों द्वारा निर्मित है।

मोकल / त्रिभुवन नारायण मंदिर

- त्रिभुवन नारायण का मंदिर विष्णु को समर्पित है
- निर्माता भोज परमार।

- आधुनिक निर्माता महाराणा मोकल।

कुम्भश्याम मंदिर –

- निर्माण कुंभा।

मीरा मंदिर – राणा सांगा ने

- इस मंदिर में मीराबाई पूजा करती थी।
- मंदिर के सामने मीरा के गुरू रेदास जी की छतरी है।

कालीका माता मंदिर / सूर्य मंदिर –

- प्राचीनतम सूर्य मंदिर था।
- जिसको मान मौर्य के द्वारा बनाया गया।

अन्नपूर्णा माता

- सिसोदिया वंश की कुलदेवी।
- निर्माण हमीर।

दुर्ग के प्रमुख महल –

- गोरा–बादल महल।
- पद्मनी महल।
- झाला महल।
- सपूत महल।
- पुरोहितों की हवेली।
- कुंभा महल / नौलखा महल।
- फतेह महल (चित्तौड़ का संग्रहालय)।
- भामाशाह की हवेली।
- रतन सिंह का महल।
- राव रणमल की हवेली।

प्रमुख जलाशय –

- सूर्यमुख कुण्ड।
- घोसुण्डी बावड़ी।

दरवाजे –

- इस दुर्ग में 7 दरवाजे हैं।
  1. पांडन पोल
  2. भैरो पोल
  3. हनुमान पोल
  4. गणेश पोल
  5. जाडोल पोल
  6. लक्ष्मण पोल
  7. राम पोल

विजय–स्तम्भ –

- निर्माण –कुम्भा (मालवा विजय के उपलक्ष में 1438–49 ई.) में ।
- वास्तुकार – जैता, नाथा, पोमा, पूंजा।
- ऊँचाई – 122 फीट।
- सिढ़ियाँ – 154।
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान पुलिस व वन विभाग का प्रतीक चिह्न।
- भगवान विष्णु को समर्पित।
- कुल 9 मंजिला भवन।
- राजस्थान का प्रथम स्मारक जिस पर 15 अगस्त, 1849 को 1 रु. का डाक टिकट जारी।

कुम्भलगढ़ दुर्ग

- उपनामः मेवाड़–मारवाड़ सीमा का प्रहरी, मेवाड़ राजाओं की संकटकालीन मेवाड़ की राजधानी।

- तीसरी आँख – कटारगढ़ ।
- निर्माताः महाराणा कुम्भा।
- निमाणः 1458 ई. मे महाराणा कुंम्भा ने अपनी पत्नी कुम्भलदेवी की स्मृति में बनवाया।
- शिल्पीः मण्डन ।

विशेषताए–

- किले के चारों तरफ की दीवार की कुल लम्बाई 36 किलोमीटर है।
- कुम्भलगढ़ दुर्ग को कर्नल जेम्स टॉड ने एस्ट्रॉकन कहा है।
- किले में कुम्भा का निवास स्थान कटारगढ़ है।
- उदयसिह ने इस किले में झालिया का मालिया बनवाया।
- अबुल फजल ने कटारगढ़ दुर्ग के बारे में कहा "यह दुर्ग इतनी बुलन्दी पर स्थित है कि इसे देखने पर सिर की पगड़ी नीचे गिर जाये।"
- महाराणा प्रताप का जन्म इसी दुर्ग में हुआ।
- उदयसिंह का राज्याभिषेक इसी दुर्ग में हुआ।
- श्रेणी – गिरी दुर्ग (जरगा पहाड़ी पर), पारिध दुर्ग।

प्रमुख इमारते

- बादल महल – राजस्थान का सबसे बड़ा महल।
- झाली रानी का मालिया।

- कटारगढ़।

मंदिर

- कुम्भस्वामी मंदिर – राणा कुम्भा।
- नीलकंठ महादेव मंदिर – टॉड ने यूनानी मंदिर कहा।

रणथम्भौर दुर्ग

- वर्तमान में – सवाई माधोपुर है।
- रणथम्भौर का शाब्दिक अर्थ "रण की घाट" है।
- चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- आकृति – अंडाकार।
- गिरि एवं दुर्ग की विशेषताएं
- उपनाम – चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई, दुर्गाधिराज

- अबुल फजल ने कहा "बाकी सब किलें नंगे हैं पर रणथंबोर दुर्ग बख्तरबंद है"।
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहां पर आक्रमण किया तथा विफल रहा इस पर उसने कहा कि " मैं ऐसे 10 दुर्गों को मुसलमान के बाल के बराबर नहीं समझता।''
- प्रवेश द्वार – नौलखा दरवाजा।
- 1301 ईस्वी में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर किले पर आक्रमण किया उस समय रणथम्भौर का पहला साका हुआ यह हम्मीर के नेतृत्व में हुआ इसे राजस्थान के इतिहास का प्रथम साका भी कहा जाता है।

- इस किले में जोगी महल, सुपारी महल, रणतभंवर गणेश जी का मंदिर, पदम तालाब, जोरा भोरा महल, पीर सदरूद्दीन, की दरगाह तथा शाकम्भरी माता का मंदिर स्थित है।
- राज्य का एकमात्र ऐसा दुर्ग, जिसमें मंदिर, मस्जिद व गिरजाघर तीनों हैं।
- अकबर कालीन टकसाल भी यहीं स्थित है।

सोनारगढ़ दुर्ग

- वर्तमान में – जैसलमेर
- पहाड़ी – त्रिकुट पहाड़ी पर स्थित है।
- निर्माण पूर्ण – शाहवाहिन। (1164)
- प्रवेश द्वार – अक्षय पोल।
- श्रेणी – धान्वन दुर्ग।
- आकर – त्रिभुजाकार।

- निर्माण राव जैसल द्वारा प्रारंभ किया गया तथा पूर्ण शाहवाहिन ॥ द्वारा किया गया।
- अन्य नाम – सोनारगढ़, स्वर्णगिरी, कमरकोट, गौहरगढ़, गलियों का दुर्ग, रेगिस्तान का गुलाब और पश्चिम सीमा का प्रहरी।

विशेषता

- चुने व सीमेंट का प्रयोग नहीं हुआ।
- दुर्ग पीले पत्थरों से निर्मित है।

- 99 बुर्ज (सर्वाधिक बुर्जा वाला किला)।
- देखने पर अंगड़ाई लेते हुए शेर के समान तथा लंगर खोले हुए जहाज के समान।
- 2009 में 5 रु. का डाक टिकट जारी।
- सत्यजीत रे ने सोनार किला फिल्म निर्माण किया।
- चारों ओर परकोटा घागरा नुमा अतः इसे कमरकोट भी कहा जाता है।
- दूसरा सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट।
- दुर्ग के भीतर 'जिन भद्र सुरी भूमिगत संग्रहालय है। जिस पर ताड़ पत्रों (ताम्र पत्रों) पर चित्रित ग्रन्थों का संग्रहरण किया गया है।
- जैसलमेर के 2½ साके :–
    - प्रथम साका – (1312) –
        - स्थानीय शासक – मूलराज।
        - आक्रमणकारी – अलाउद्दीन खिलजी।
    - दूसरा साका – (1370–71)
        - स्थानीय शासक – दूदा।
        - आक्रमणकारी – फिरोजशाह तुगलक।
    - अर्ध साका – (1550)
        - स्थानीय शासक – लूणकर्ण।
        - आक्रमणकारी – कंधार अमीर अली।

राजस्थान के प्रमुख मंदिर

1. किराडू के मंदिरः–

- किराडू राजस्थान के बाड़मेर जिले में स्थित प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है।
- हाथम गाँव के पास स्थित 'हल्देश्वर पहाड़ी' के नीचे स्थित यह स्थल प्राचीन काल में 'परमारों' की राजधानी रही है।
- प्राचीनकाल में यह स्थल 'किरातकूप' के नाम से जाना जाता था।
- 1161 ई. का एक शिलालेख प्राप्त होता है।

चित्र–1: किराडू मंदिर

- यहाँ पाँच मंदिरों का समूह सिति है। जिसमें से 'एक वैष्णव' मंदिर तथा '4 शैव' मंदिर है।

  5 मंदिर = 4 शैव मंदिर + 1 वैष्णव मंदिर
- इन मंदिरों में अधिकांश खण्डर हो गये है केवल सोमेश्वर मंदिर अच्छी अवस्था में स्थित है। जिसके आधार पर यहाँ के मंदिरों की स्थापत्यकला का वर्णन किया जा सकता है।
- 1178 ई. में यहाँ मुहम्मद गौरी का आक्रमण हुआ जिसके कारण ये सभी क्षतिग्रस्थ हो गये।
- ये सभी मंदिर स्थापत्यकला की 'नागर शैली' में बने है।
- मध्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी ने भी इन पर आक्रमण किया तथा इन्हें नुकसान पहुचाया।
- इन्हें 'राजस्थान का खजुराहों ' कहा जाता है।

2. ओसिंया के मंदिरः–

- ओसिंया राजस्थान के 'जोधुपर' जिले में जोधपुर से लगभग 60कि.मी. की दूरी पर स्थित प्राचीन नगर है।
- यह स्थल राजस्थान में अपनी मंदिर स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है।
- 'महामारू शैली' का विकास राजस्थान में गुर्जर 'प्रतिहार वंश' के काल में हुआ था।
- धार्मिक सहिष्णुता और समभाव प्रतिहार कालीन युग की आत्मा है अतः इस समय सभी सम्प्रदायों के मंदिरों के निर्माण हुआ।

चित्र–2: ओसिंया मंदिर (महावीर स्वामी मंदिर)

- ओसिंया मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से मंदिरों की नगरी है जहाँ 'शैव सम्प्रदाय' के काफी संख्या में मंदिर निर्मित हुए जिनके साक्ष्य वर्तमान में भी प्राप्त होते है।
- यहाँ विष्णु और शिव का समन्वित रूप 'हरहिर' को समर्पित 8वीं शताब्दी के प्रतिहार युगीन तीन मंदिर बने है।
- 'सच्चियाय माता तथा महावीर स्वामी' का मंदिर काफी बड़े व प्रसिद्ध है।
- सच्चियाय माता ओसवालों की कुलदेवी है।
- ओसिंया को 'राजस्थान का भुवनेश्वर' तथा 'मारवाड़ का खजुराहो' कहा जाता है।

3. रणकपुर जैन मंदिर

- रणपुर 'पाली' जिले में स्थित वह स्थल है जो जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।
- यहाँ स्थित मंदिरों में तीन जैन मंदिर 'एक वैष्णव' मंदिर प्रमुख है।
  (i) आदिनाथ (ऋषभदेव) मंदिर।
  (ii) नेमिनाथ का जैन मंदिर।
  (iii) पार्श्वनाथ जैन मंदिर।
  (iv) सूर्यनारायण का मंदिर (वैष्णव मंदिर)।

(i) ऋषभदेव जैन मंदिरः–

- ऋषभदेव/आदिनाथ तथा चौमुखा मंदिर के नाम से जाना जाता है जो मथाई नदी के किनारे स्थित है।
- सेठ धरणकशाह द्वारा निर्मित करवाया गया।
- इकस निर्माण 1439 ई. में हुआ।
- प्रमुख वास्तुकार–देपाक
- इसके कुल 24 मण्डप, 84 शिखर और 1444 स्तम्भ है।
- इसे स्तमभो का वन या खम्भों का अजायबघर कहा जाता है।
- माघ कवि ने इसे 'त्रिकोक्य दीपक' कहा है।
- मंदिर के प्रवेश द्वार पर लगे शिलालेख में इसे त्रैलोक्य दीपक तथा श्री चतुर्भुख युगाद्वीश्वर विहार कहा है।

(ii) नेमिनाथ जैन मंदिरः–

- चौमुखा मंदिर के समीप ही यह मंदिर भी स्थित है।
- इसे पातरियों का देवरा/वैश्याओं वाला मंदिर भी कहते है।

(iii) पार्श्वनाथ मंदिर

- यह नेमिनाथ मंदिर के साथ में बना है जिसके गर्भगृह में श्यामल वर्ण की पार्श्वनाथ प्रतिमा है।

(iv) सूर्यनारायण मंदिर

- पार्श्वनाथ मंदिर से थोड़ी दूरी पर मंदिर स्थित है जिसके गर्भगृह में दो प्रतिमाए हैः–

1. सूर्य प्रतिमा 2. सूर्याणी (सूर्य भगवान की पत्नि) की प्रतिमा

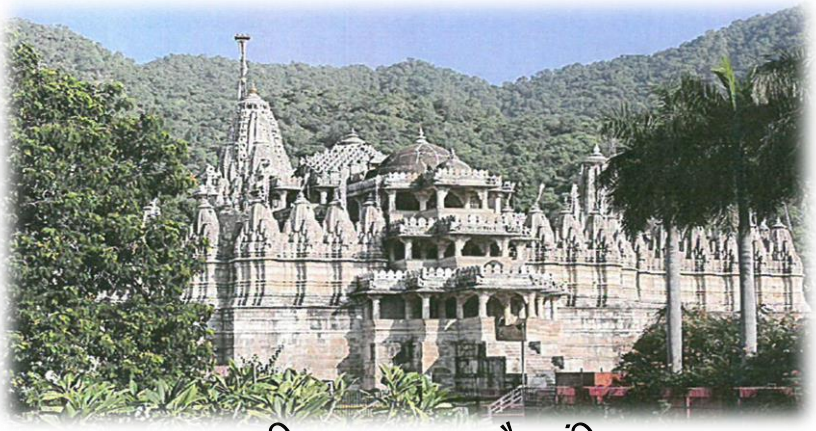

चित्र–3: रणकपुर जैन मंदिर
(ऋषभदेव मंदिर)

4. कुम्भश्याम मंदिर

- कुम्भश्याम मंदिर चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित है जो मूल रूप से सूर्य मंदिर था।
- 1449 ई. में मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने अपने इस्टदेव भगवान विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति को स्थापित करवाकर इसका जीर्णोद्धारा करवाया।
- कुम्भा द्वारा अपने आराध्य देव की प्रतिमा स्थापित करवाने के कारण इसे कुम्भश्याम मंदिर कहा जाता है।

चित्र–4: कुम्भा मंदिर

5. देलवाडा के जैन मंदिर

- सिरोही जिले के देलवाड़ा नामक स्थल पर बने मंदिरों को देलवाड़ा के जैन मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- 11वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य बने ये मंदिर सोलंकी स्थापत्य कला (मारू गुर्जर शैली) के उदाहरण है।
- ये राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ मंदिर है जहाँ जैन मंदिरों का समूह स्थित है।
- कुल 6 जैन मंदिर = 5 श्वेताम्बर जैन मंदिर + 1 दिगम्बर जैन मंदिर
- श्वेताम्बर सम्प्रदाय के पाँच जैन मंदिरः–
  - (i) विमलवसहि जैन मंदिर।
  - (ii) लूणवसहि जैन मंदिर।
  - (iii) पित्तलहरी या भीमाशाह जैन मंदिर।
  - (iv) महावीर स्वामी जैन मंदिर।

चित्र–5: देलवाड़ा मंदिर

- दिगम्बर जैन मंदिरः– भगवान कुंथुनाथ जैन मंदिर।

(i) विमलवसहि जैन मंदिरः–

- निर्माणः– गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव के मंत्री विमलसाह ने 1031 ई. करवाया।
- शिल्पीः– कीर्तिधर।
- गर्भगृह में आदिनाथ/ऋषभदेव की प्रतिमा स्थापित।

(ii) लूणवसहि जैन मंदिरः–

- निर्माणः– चालुक्य राजा वीर धवल के महामंत्री तेजपाल व वास्तुपाल ने 1230–30 ई. में महान शिल्पी शोभनदेव के निर्देशन में करवाया।
- 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ का है।
- इसे देवरानी जेठानी का मंदिर भी कहते है।

(iii) पित्तलहरी जैन मंदिरः–

- निर्माणः– भीमाशाह ने 15वीं शताब्दी में करवाया।
- आदिनाथ की 108 मण की पीतल की मूर्ति स्थित है।
- शिल्पीः– देव

(iv) पार्श्वनाथ जैन मंदिरः–

- तीन मंजिला, गर्भगृह में पार्श्वनाथ की प्रतिमा।

(v) महावीर स्वामी जैन मंदिरः–

- सिलावटो का मंदिर भी कहा जाता है।

6. सोनी जी की नसियाँः–

- अजमेर स्थित जैन मंदिर है।
- प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का मंदिर है।
- निर्माणः– मूलचन्द सोनी तथा टीकमचन्द सोनी ने 1864–65 ई. मे करवाया।

चित्र–6: सोनी जी की नसियाँ

- 'स्वर्ण नगरी हॉल' इसी मंदिर का हिस्सा है।
- इसे 'सिंहकूट चैत्यालय' भी कहा जाता है।
- इसका बाह्य भाग लाल पत्थर से निर्मित होने के कारण इसे 'लाल मंदिर' भी कहा जाता है।

7. ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर (अजमेर):–

- ब्रह्मा का सबसे प्राचीन मंदिर।
- निर्माणः– आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा 14वी सदी में करवाया तथा वर्तमान स्वरूप 1809 ई. में गोकुलचंद पारीक ने दिया।

चित्र–7: ब्रह्मा मंदिर

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इसे 'राष्ट्रीय महत्व का स्मारक' घोषित किया है।

8. जगतशिरोमणि मंदिरः–

- जयपुर के आमेर नमक स्थल पर स्थित है।
- महाराजा मानसिंह की पत्नी महारानी कनकावती द्वारा 1599–1908 ई. के मध्य करवाया।
- निर्माण में कुल 9 लाख 72 हजार रू खर्च हुए।
- गर्भगृह में विष्णु प्रतिमा, द्वारिकाधीश, श्रीकृष्ण, तथा मीराबाई की प्रतिमा स्थापित है।

चित्र–8: जगतशिरोमणि मंदिर

- नागर शैली में निर्मित है।
- कृष्ण की वह प्रतिमा जिसकी पूजा मीराबाई स्वयं करती थी वह इस मंदिर के गर्भगृह में स्थापित है।
- इसे मीरा मंदिर भी कहा जाता है।
- जगतसिंह की स्मृति में निर्मित होने के कारण जगतशिरोमणि मंदिर के नाम से जाना गया।

Unit 2
Monuments of Rajasthan: General Overview

शेखावाटी की प्रसिद्ध हवेलियां

राजस्थान के सीकर, झुंझुनू तथा चूरू को मिलाकर शेखावाटी का नाम दिया गया है। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियाँ अधिक भव्यता, स्थापत्य की दृष्टि से भिन्नता लिए हुए हैं एवं कलात्मक है। शेखावाटी के रामगढ़, मण्डावा, पिलानी, सरदारशहर, रतनगढ़, नवलगढ़, फतेहपुर, मुकुंदगढ़, झुं
, महनसर, चुरू आदि कस्बों में खड़ी विशाल हवेलियाँ आज भी अपने स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। राजस्थान की हवेलियाँ अपने छज्जों, बरामदों और झरोखों पर बारीक व उम्दा नक्काशी तथा भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। झुंझुनूं में टीबड़ेवाला की हवेली तथा ईसरदास मोदी की हवेली अपने शिल्प वैभव के कारण अलग ही छवि लिए हुए हैं। मण्डावा (झुंझुनूं) में सागरमल लाडिया, रामदेव चौखाणी तथा रामनाथ गोयनका की हवेली, डूंडलोद (झुंझुनूं) में सेठ लालचन्द गोयनका, मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं) में सेठ राधाकृष्ण एवं केसर देव कानोड़िया की हवेलियाँ, चिड़ावा (झुंझुनूं) में बागड़िया की हवेली, डालमिया की हवेली, महनसर (झुंझुनूं) की सोने -चाँदी की हवेली, श्रीमाधोपुर (सीकर) में पंसारी की हवेली, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) में केडिया एवं राठी की हवेली प्रसिद्ध है। झुंझुनूं जिले की ये ऊँची-ऊँची हवेलियाँ बलुआ पत्थर, ईंट, जिप्सम एवं चूना, काष्ठ तथा ढलवाँ धातु के समन्वय से निर्मित अपने अन्दर भित्ति चित्रों की छटा लिये हुए हैं।

सीकर में गौरीलाल बियाणी की हवेली, रामगढ़ (सीकर) में ताराचन्द रूइया की हवेली समकालीन भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध है। फतेहपुर (सीकर) में नन्दलाल देवड़ा, कन्हैयालाल गोयनका की हवेलियाँ भी भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध है। इन्हें देखने के लिए साल भर देशी-विदेशी पर्यटको का ताँता लगा रहता है।

जैसलमेर की हवेलियाँ

जैसलमेर के सांस्कृतिक इतिहास में यहाँ के स्थापत्य कला का अलग ही महत्व है। राजस्थान के जैसलमेर को गोल्डन सिटी भी कहा जाता है। पर्यटकों के लिए यह खास आकर्षण का केंद्र है हवेलियों में मुख्यतः तीन हवेलियां प्रमुख हैं- पटुओं की हवेली, दीवान सालिम सिंह की हवेली व दीवान नथमल की हवेली। कला की दृष्टि से पटुओं की हवेली व नथमल हवेली स्थापत्य कला का सर्वोत्तम उदाहरण है। वहीं दीवान सालिम सिंह की हवेली अपनी विशालता व भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। ये सभी हवेलियाँ स्थानीय पीले रेतीले पत्थर से बनी है। यह पत्थर खुदाई के काम के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। इसे घिसने पर यह अत्यधिक चिकना व चमकीला हो जाता है। यहाँ के लगभग सभी भवन पीले, कलात्मक झरोखों से युक्त हैं।

मुगल सत्ता के पराभव के उपरांत सिंध, गुजरात व मालवा की ओर से कई हिंदु व मुस्लिम कलाकार यहाँ आकर बसने लगे तथा उन्होंने इन हवेलियों का निर्माण किया। किंतु यदि ये कारीगर गुजरात व मालवा की ओर से आए होते तो अपनी कला के कुछ मौलिक उदाहरण अवश्य मिलते, जो कि नहीं मिलते हैं। परंतु जैसलमेर राज्य से लगे सिंध प्रांत में स्थानीय कला के ढेरों उदाहरण प्राप्त होते हैं, जो कि सिंध नदी को पार करते हुए बलूचिस्तान की सीमा तक प्राप्त होते हैं। अतः संभव है कि यहाँ पर की गई नक्काशी के लिए कारीगर सिंध प्रांत से जैसलमेर की ओर आए होंगे। संभवतः लकड़ी के काम के लिए कलाकार मालवा व गुजरात से आए होंगे, क्योंकि ये दोनों ही प्रांत इस कार्य हेतु प्रसिद्ध हैं।

पटुओं की हवेली

ये कुल मिलाकर पाँच हैं, जो कि एक-दूसरे से सटी हुई हैं। पाँचों हवेलियों के अग्रभाग बारीक नक्काशी व विविध प्रकार की कलाकृतियाँ युक्त खिंकियों, छज्जों व रेलिंग से अलंकृत है। जिसके कारण ये हवेलियाँ अत्यंत भव्य व कलात्मक दृष्टि से अत्यंत सुंदर व सुरम्य लगती है। हवेलियों में प्रवेश करने हेतु सीढियाँ चढ़कर चबूतरे तक पहुँचकर दीवान खाने (मेहराबदार बरामदा) में प्रवेश करना पड़ता है।

सालिम सिंह की हवेली

सालिम सिंह की हवेली छह मंजिली इमारत है, जो नीचे से संकरी है। जहाजनुमा इस विशाल भवन में आकर्षक खिड़कियां, झरोखे तथा द्वार हैं। नक्काशी यहाँ के शिल्पियों की कलाप्रियता का अद्भुत प्रदर्शन है। इस हवेली का निर्माण दीवान सालिम सिंह द्वारा करवाया गया, जो एक प्रभावशाली व्यक्ति थे और उसका राज्य की अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण था।

दीवान नथमल की हवेली

यह हवेली दीवान नथमल द्वारा बनवाई गई है तथा यह कुल पाँच मंजिली पीले पत्थर से निर्मित है। इस हवेली का निर्माण काल 1884-85 ई. है। हवेली में सुक्ष्म खुदाई मेहराबों से युक्त खिंकियों, घुमावदार खिंकियाँ तथा हवेली के अग्रभाग में की गई पत्थर की नक्काशी पत्थर के काम की दृष्टि से अनुपम है। यह तत्कालीन स्थापत्य कला का उत्रत उदाहरण है। हवेली में पत्थर की खुदाई के छज्जे, स्तंभ, झरोखों पर फूल, पत्तियां, पशु-पक्षियों का बड़ी ही मनमोहक आकृतियां बनी हैं।

झुंझुनू में कुएं एवं बावड़ियां

सामान्य तौर पर बावरी सूखे क्षेत्रों में, जहां कोई बारहमासी जल स्रोत नहीं होता है या जहां भूमिगत जल पृथ्वी के अंदर गहराई में पाया जाता है। राजस्थान के अर्धशुष्क क्षेत्र में स्थित झुंझुनू के आस-पास कोई नदी नहीं है। हालाँकि शासकों ने कुछ झीलें और तालाब खुदवाए, लेकिन वे कभी भी पूरे शहर का भरण-पोषण नहीं कर सके। इसीलिए इस शहर में कई बावड़ियाँ खोदी गईं, जिनमें से कुछ अभी भी काम कर रही हैं। ये बावड़ियाँ और जोहड़ियाँ मूलतः मंदिरों के पास स्थित हैं। इससे पता चलता है कि झुंझुनू के लोगों के लिए पानी कितना कीमती था।

मेड़तानी जी बावरी - झुंझुनू

झुंझुनू में स्थित मेडतानी जी बावड़ी सबसे पुरानी है। इस विशाल एवं वास्तुकला की दृष्टि से सपन्न व अनुपम बावड़ी का निर्माण झुंझुनू के हिन्दू शासक शार्दुल सिंह शेखावत की रानी मेड़तनी जी ने सन 1783 ई० मे करवाया था। जिस कारण इसे मेड़तनी की बावड़ी के नाम से जाना जाता हैं। इस बावड़ी के निर्माण में उस समय लगभग 70 हज़ार रूपये खर्च हुए थे। इसके एक तरफ कलात्मक कुआँ है तो दूसरी ओर मुख्यद्वार से जल स्तर तक जाने के लिये सैकड़ों सीढ़ियां बनी हुई हैं। बावड़ी लगभग 150 फीट गहरी तथा तीन विशाल खंडो में निर्मित है। इसके अंदर दोनों तरफ कलात्मक सीढिया, झरोखे और बरामदे बने हुए है। जहाँ लोग जलग्रहण और स्नानादि के बाद आराम कर सकता था।

बिरदी चंद का कुआँ - झुंझुनू

बिरदी चंद का कुआँ झुंझुनू में पर्यटकों की रुचि का महत्वपूर्ण स्थल हैं। बिरदी चंद कुआं, जिसे बदानी चंद कुआं भी कहा जाता है, शहर के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित है। इसके चारों किनारों पर चार भव्य मीनारें स्थित हैं। पहले ये मीनारें सुंदर चित्रों से सजी हुई थीं, लेकिन अब इन चित्रों के रंग फीके पद गए हैं।

जिसने भी यह कुआँ बनवाया वह सचमुच एक दूरदर्शी व्यक्ति था। उन्होंने न केवल कुएं के पश्चिमी किनारे पर गुजरने वाले कारवां के लिए एक सराय का निर्माण किया, बल्कि परिसर के भीतर महिलाओं के लिए एक मंडप भी बनाया। यह याद रखना होगा कि उन दिनों महिलाएं ज्यादातर घरों तक ही सीमित थीं और इसलिए मंडप उन्हें समाजीकरण के लिए एक बड़ा मंच प्रदान करता था। भगवान हनुमान को समर्पित एक सुंदर मंदिर पास में ही स्थित है।

चाँद बावड़ी

चाँद बावड़ी एक सीढ़ीदार कुआँ है, जो राजस्थान में जयपुर के निकट दौसा ज़िले के आभानेरी नामक ग्राम में स्थित है। यह सीढ़ीदार कुआँ 'हर्षत माता मंदिर' के सामने स्थित है और भारत ही नहीं, अपितु विश्व के सबसे बड़े सीढ़ीदार और गहरे कुओं में से एक है।

निर्माण

इस बावड़ी का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था। इसमें 3,500 संकरी सीढ़ियाँ हैं और ये 13 तल ऊँचा और 100 फुट या 30 मीटर गहरा है। ये कुआँ उस समय जल की कमी से जूझ रहे इस क्षेत्र की जल समस्या का एक व्यावहारिक समाधान था। इस स्थान की शुष्क जलवायु ने स्थानीय लोगों को एक ऐसे कुएं की खुदाई के लिए विवश किया, जिस पर वर्ष भर जल के लिए निर्भर रहा जा सके। दंतकथाओं के अनुसार यह कुआँ एक रात में भूतों द्वारा खोदा गया।

विशेषताएँ

इस विशालतम बावड़ी के प्रमुख आकर्षण इस प्रकार हैं-

1. यह बावड़ी चारों तरफ़ से 35 मीटर चौड़ी है।
2. ऊपर से नीचे तक पक्की बनी सीढ़ियों के कारण पानी का स्तर चाहे जो भी हो हमेशा आसानी से पानी भरा जा सकता है।
3. चाँद बावड़ी, 100 फ़ीट गहरी, 13 मंजिला और 3500 सीढ़ियों युक्त है।
4. यह बावड़ी प्रसिद्ध 'हर्षत माता मन्दिर' के सामने स्थित है।
5. यह विश्व की सबसे गहरी और बड़ी बावड़ी है।

रानी जी की बावड़ी (बूंदी की बावड़ी)

बूंदी, उत्तर-पश्चिम राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख शहर है, जो अपने खूबसूरत किलों और महलों, झीलों, बाजारों के साथ-साथ बावड़ी नामक जलाशयों के लिए प्रसिद्ध है। शहर में स्थित बड़ी संख्या में मंदिरों के कारण "छोटी काशी" के रूप में भी जाना जाता है।

रानी जी की बावड़ी का निर्माण 1699 में बूंदी के शासक राव राजा अनिरुद्ध सिंह की छोटी रानी रानी नाथवती जी ने करवाया था। रानी नाथावती जी का विवाह राजा की दूसरी पत्नी के रूप में हुआ था, क्योंकि उनकी पहली पत्नी उन्हें उत्तराधिकारी देने में सक्षम नहीं थी। हालाँकि, जब रानी नाथावती जी ने एक बेटे को जन्म दिया, तो ईर्ष्यालु पहली पत्नी ने उन्हें अलग कर दिया।

उन्होंने अपनी ऊर्जा सार्वजनिक परियोजनाओं और बावड़ियों के निर्माण में लगाई और रानी की जी बावड़ी बूंदी में सबसे बड़ी है। यह 150 फीट गहरी एक बहुमंजिला संरचना है, जो जटिल और शानदार नक्काशी से ढकी हुई है।

बावड़ी में एक संकीर्ण प्रवेश द्वार है, जिसके शीर्ष पर चार खंभे हैं जो जटिल नक्काशीदार पत्थर के कोष्ठकों से सजाए गए पतले मेहराबों से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक कोने में पत्थर के हाथी खड़े हैं। प्रत्येक मंजिल पर पूजा स्थल भी हैं, जो बावड़ी में अद्वितीय है।

राजसमन्द

राजसमंद झील पर राजप्रशस्ति महाकाव्य की रचना श्री रणछोड़ भट्ट नामक संस्कृत कवि द्वारा मेवाड़ के महाराणा राजसिंह की आज्ञा से 1676 ई. में की थी। इस ग्रन्थ के लिखे जाने के छः वर्ष पश्चात महाराणा जयसिंह की आज्ञा से इसे शिलाओं पर उत्कीर्ण किया गया। छठी शिला में इसका संवत 1744 दिया हुआ है। इसे 25 बड़ी शिलाओं में उत्कीर्ण करवा कर राजसमन्द झील की नौ चौकी पाल (बांध) पर विभिन्न स्तरों में किया गया। यह भारत का सबसे बड़ा शिलालेख है। इसका प्रत्येक शिलाखंड काले पत्थर से निर्मित है जिनका आकार तीन फुट लम्बा तथा ढाई फुट चौड़ा है। प्रथम शिलालेख में माँ दुर्गा, गणपति गणेश, सूर्य आदि देवी-देवताओं की स्तुति है। संस्कृत भाषा में प्रणीत इस महाकाव्य के शेष 24 शिलालेखों में प्रत्येक में एक-एक सर्ग है तथा इस प्रकार कुल 24 सर्ग है। इसमें कुल 1106 श्लोक है। संस्कृत भाषा में होने के बावजूद इसमें अरबी, फ़ारसी तथा लोकभाषा का भी प्रभाव है। इसमें मुख्यतः महाराणा राजसिंह के जीवन-चरित्र एवं उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया गया है किन्तु इसके प्रथम 5 सर्गों में मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास दिया गया है। इसके अलावा इसमें 17 शताब्दी में मेवाड़ की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक दशा का भी वर्णन मिलता है। यह एक ऐसा काव्य है जिसमें

कविता कम और इतिहास प्रधान है। कवि ने महाराणा राजसिंह से संबंधित जिन घटनाओं का वर्णन इसमें किया है वो उसकी स्वयं की आँखों देखी है। इसमें राजसमन्द झील के निर्माण के दुष्कर कार्य, इस पर हुए खर्च तथा इसकी प्रतिष्ठा का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें तत्कालीन मेवाड़ की संस्कृति, वेशभूषा, शिल्पकला, दान-प्रणाली, मुद्रा, युद्ध-नीति, धर्म-कर्म आदि का भी अच्छा उल्लेख है। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू के अनुसार राजप्रशस्ति पहला अभिलेख है, जिसमें पृथ्वीराज रासो का प्रसंग संस्कृत में उद्धृत किया गया है। इसमें बप्पा रावल की कथा को एकलिंगपुराण से उठाया गया है। इसमें सूर्यवंश की वंशावली के साथ गुहिल वंश का संबंध स्थापित किया गया है और इस वंश को विप्र के बजाय सूर्यवंश बताने का प्रयास किया गया है।

जयसमंद

राजस्थान की ढेबर झील, जिसे जयसमंद झील के नाम से भी जाना जाता है, प्रसिद्ध गोविंद बल्लभ पंत सागर के बाद ये भारत की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम झील है। उदयपुर जिले में स्थित, झील 87 किमी^{2} के क्षेत्र को कवर करती है। जब उदयपुर के राणा जय सिंह ने गोमती नदी पर संगमरमर का बांध बनाया था तब इसे 17वीं शताब्दी में बनाया गया था। झील मुख्य उदयपुर शहर से 45 किमी दूर स्थित है। ढेबर झील एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी का स्वरूप मानी जाती है।

ढेबर झील संगमरमर बांध 984.3 फीट ऊंचा है और भारत के विरासत स्मारकों का एक हिस्सा है। झील का एक अन्य आकर्षण हवा महल पैलेस है, जो मेवाड़ के पहले महाराणाओं की शीतकालीन राजधानी के रूप में कार्य करता था। ढेबर झील को महाराणा जय सिंह ने 1685 में बनवाया था। झील को मेवाड़ के दक्षिण-पूर्वी कोने में खेती के लिए पानी की आपूर्ति के लिए बनाया गया था। ढेबर झील पर तीन द्वीप हैं जिनमें भील जनजाति रहती है। दो बड़े द्वीपों को बाबा का मगरा और छोटे द्वीप का नाम पियारी रखा गया है। झील वाली जगह पर छह आकर्षक स्मारक और एक शिव मंदिर हैं। झील के उत्तरी छोर की ओर एक प्रांगण के साथ एक महल है और इसके दक्षिणी छोर पर 12 खंभों का मंडप है। दक्षिण में महलों वाली पहाड़ियां हैं।

हवा महल

राजस्थान की राजधानी जयपुर यानी 'पिंक सिटी' के बड़ी चौपड़ में स्थित हवा महल एक पर्यटन स्थल है, जिसे 'पैलेस ऑफ विंड्स' भी कहा जाता है।
लाल और गुलाबी बलुआ पत्थरों से बने हवा महल की खासियत है कि यह बिना नींव के बनी दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है और यह शाही विरासत, वास्तुकला और संस्कृति का प्रतीक है।

हवा महल का इतिहास

हवा महल का निर्माण जयपुर के राजा सवाई प्रताप सिंह ने अपने शासनकाल (1778-1803) के दौरान सन 1799 में करवाया था। ऐसा कहा जाता है कि हवा महल के निर्माण का मुख्य उद्देश्य जयपुर की शाही राजपूत महिलाओं को झरोखों यानी खिड़कियों में से सड़क पर होने उत्सवों को देखने की अनुमति देना था। दरअसल, उस समय महिलाएं पर्दा प्रथा का पालन करती थीं और इस तरह वे अपने रिवाजों को बनाए हुए स्वतंत्रता का आनंद ले सकती थीं।

वास्तुकला

इस महल की दीवारों पर राजपूत शिल्पकला का बेहतरीन नमूना देखने को मिलता है,जयपुर का हवा महल एक पांच मंजिला इमारत है। कहा जाता है कि ये महल ठोस नींव की कमी की वजह से घुमावदार और 87 डिग्री के कोण पर झुका हुआ है। इसको गुलाबी रंग के बलुआ पत्थरों से बनाया गया है। इस महल की वजह से ही जयपुर को पिंक सिटी कहा जाता है। लाल चन्द उस्ता इस अनूठे भवन का वास्तुकार था, जिसने जयपुर शहर की भी शिल्प व वास्तु योजना तैयार करने में सहयोग दिया था। शहर में अन्य स्मारकों की सजावट को ध्यान में रखते हुए लाल और गुलाबी रंग के बलुआ-पत्थरों से बने इस महल का रंग जयपुर को दी गयी 'गुलाबी नगर' की उपाधि के लिए एक पूर्ण प्रमाण है। इस की 953 खिड़कियां भी इसे दूसरे महलों से अलग बनाती है। इन खिड़कियों की वजह से महल में कभी भी गर्मी नहीं होती।

कीर्ति स्तम्भ

कीर्ति शब्द का प्रयोग यश तथा यश को विस्तृत करने वाले किसी भी निर्माण कार्य के लिए हुआ है। अभिलेखों में भी वापी, बौद्ध, अथवा हिंदू मंदिर, तड़ाग, चैत्य और बौद्ध मट तथा मूर्तियों आदि के लिए कीर्ति शब्द का प्रयोग पाया जाता है। कीर्ति स्तंभ शब्द कीर्ति शब्द से जुड़ा हुआ है; इसका अर्थ विजय स्तंभ बनावाने की परिपाटी प्राचीन है। मिस्र, बाबुल, असूरिया तथा ईरान की प्राचीन सभ्यताओं के सम्राटों ने अपनी विजयों की प्रशस्तियाँ सदा स्तंभों पर उत्कीर्ण कराई थीं। भारत में यह प्रथा संभवत: गुप्त सम्राटों ने प्रचलित की। इनसे पूर्व के अशोक के जो स्तंभ है वे कीर्तिस्तंभ न होकर उसके धर्मदेशों के उद्घोष हैं।

कीर्ति स्तम्भ एक स्तम्भ या मीनार है जो राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में स्थित है। यह 122 फिट ऊँची है। यह 7 मंजिला है। इसमें 157 सीढ़ी है। चित्तौड़ के महाराण कुंभा ने गुजरात नरेश महमूद को पराजित करने के बाद चित्तौड़ के किले में एक विशाल कीर्तिस्तंभ का निर्माण करवाया था। यह कीर्तिस्तंभ अपने वास्तुशिल्प के साथ साथ देवप्रतिमाओं के अलंकरण के कारण विशेष महत्व रखता है।

- कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में कुंभा की उपलब्धियों एवं उसके द्वारा रचित ग्रंथों का वर्णन मिलता है।
- इस प्रशस्ति में चंडीशतक, गीतगोविंद की टीका संगीतराज आदि ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।
- प्रशस्ति में कुंभा को महाराजाधिराज अभिनव, भरताचार्य, हिंदुस्तान सुरतान, राय रायन, राणो, रासो छाप, गुरु दान गुरु, राजगुरु और सेल गुरु उपाधियों से पुकारा गया है।
- राणा कुंभा ने मालवा और गुजरात की सेना को हराने के बाद इस विजय के उपलक्ष में चित्तौड़ में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया था।
- विजय स्तंभ की पांचवी मंजिल पर उत्कीर्ण है-

  महाराणा कुंभा की उपलब्धियां तथा युद्धों का वर्णन।।

  उत्कीर्णकर्त्ता- जेता, पौमा, नापा, पूँजा।

विजय स्तंभ

भारत के जीवंत राज्य राजस्थान में चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक किले के भीतर स्थित, विजय स्तंभ, या विजय टॉवर, राजपूत वीरता और जीत का एक विशाल प्रमाण है। विजय और गौरव का प्रतीक, यह इमारत न केवल एक महत्वपूर्ण सैन्य सफलता का प्रतीक है, बल्कि मध्ययुगीन भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत को भी समाहित करती है।

स्तम्भ की उत्पत्ति

विजय स्तंभ का निर्माण 1448 में महमूद खिलजी के नेतृत्व में मालवा और गुजरात की संयुक्त सेना पर महाराणा कुंभा की शानदार जीत के बाद शुरू किया गया था। यह जीत केवल एक सैन्य उपलब्धि नहीं थी, बल्कि राजपूताना क्षेत्र के लिए मनोबल बढ़ाने वाली थी, जिससे हमलावर सेनाओं के खिलाफ मेवाड़ की संप्रभुता को मजबूत किया।

विजय स्तंभ का निर्माण विजय के तुरंत बाद शुरू हुआ और इसे पूरा होने में लगभग दस साल लग गए, 1448 में इसका उद्घाटन हुआ। टावर 37.19 मीटर (लगभग 122 फीट) की ऊंचाई तक पहुंचता है और जटिल नक्काशी और शिलालेखों से सजा हुआ है, जो प्रतिबिंबित करता है। उस समय की स्थापत्य और कलात्मक संवेदनाएँ। लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से निर्मित, नौ मंजिला संरचना में एक जटिल ज्यामितीय योजना है और यह हिंदू देवताओं की बहुतायत से परिपूर्ण है, जो उस युग के गहरे धार्मिक उत्साह को दर्शाती है।

यह स्तंभअपनी विस्तृत मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है जो महान महाकाव्यों, रामायण और महाभारत की कहानियों के साथ-साथ विष्णु के विभिन्न अवतारों और अन्य पौराणिक विषयों को चित्रित करती हैं। टावर के अंदर और आसपास के शिलालेख नागरी और फ़ारसी सहित विभिन्न लिपियों में हैं, जो उस काल के विविध सांस्कृतिक प्रभावों को दर्शाते हैं।

आसपास के क्षेत्र पर नजर रखने के लिए एक सुविधाजनक स्थान के रूप में भी काम करता था। संस्कृति की एक स्थायी विरासत है जो दुनिया भर के आगंतुकों को प्रेरित और आश्चर्यचकित करती रहती है। यह राजस्थानी पर्यटन की एक प्रतीकात्मक विशेषता बन गई है, जो राज्य की ऐतिहासिक कथा और स्थापत्य भव्यता को समाहित करती है।